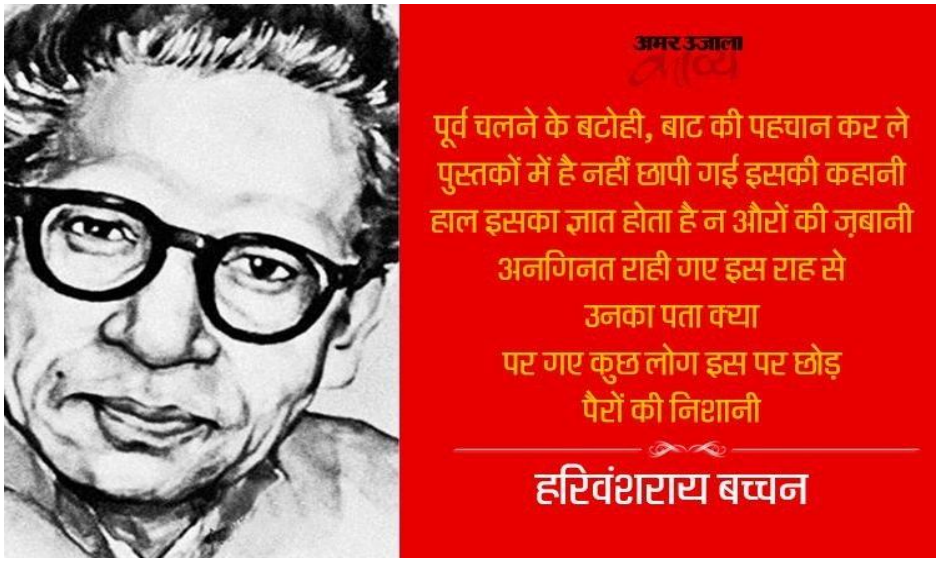

<u>आत्मपरिचय</u>-

श्री हरिवंश राय बच्चन

- पहले आत्म परिचय

  कवि की विचारधारात्मक पृष्ठभूमि :

जब तक हमारा कवि के विचारों से परिचय न हो तब तक हम उसकी रचना के अर्थ, भाव और प्रतीकात्मक संदेश तक नहीं पहुंच सकते। अतः सबसे पहले हम बच्चन जी की विचार-भूमि से परिचित हो लेते हैं।

बच्चन जी के काव्य सृजन का समय हिंदी कविता के छायावादी युग के ठीक बाद का है। छायावादी कविता में जो रोमानीपन है, भाषा में लालित्य के प्रति मोह है और जीवन के यथार्थ के साथ जो निरपेक्षता का भाव है, वह उन दिनों क्षीण हो रहा था। कविता कल्पनाओं

के मनोरम संसार से ऊब कर जीवन की वास्तविकता तक पहुंचने के लिये संघर्ष कर रही थी।

दुनिया दो महायुद्धों की भीषण मारकाट और तबाही भोग चुकी थी। युद्ध के कारण आम आदमी का हृदय बुरी तरह विकल था। आर्थिक संकटों का बोझ था। बाहर की हिंसा ने अंदर के मन को भी लहुलुहान कर दिया था।

ऐसे में बच्चन जी अपनी कविता में भाषायी सरलता के साथ-साथ अभिव्यक्ति की सरलता को भी लेकर काव्य जगत में आये। उन्होंने सादगी के साथ सहजता के उपकरणों से कविता को रख और उसमें मनुष्य मन की विकलता को प्रस्तुत किया।

बच्चन जी की रचनाओं में गेयता का गुण अपनी प्रधानता के साथ मौजूद है।गीतात्मक रचना की संप्रेषणीयता अधिक होती है। यहां तुलसीदास की रामचरित मानस, सूरदास के पद और कबीर, मीरां की रचनायें लोगों को जुबानी याद हैं। वे उनका गायन करते हैं।

उन्होंने अपने जीवन के यथार्थ को कविता में प्रस्तुत किया और उसे आमजन का अनुभूत यथार्थ बना दिया। उन्होंने सूफियाना भावभूमि को अपनाकर उसकी मस्ती और दार्शनिकता को हिंदी कविता के संसार में प्रवेश दिलाया।

गीत का भाव परिचय :

कवि की वैचारिक पृष्ठभूमि को जान लेने के बाद आईये अब जिस कविता का हम पाठ और व्याख्या करने जा रहे हैं, उसका भाव परिचय प्राप्त कर लें। इससे हम रचना के और भी निकट पहुंच सकेंगे।

हम जिस संसार में जीवन जीते हैं, उसका अपना तौर-तरीका होता हे। बहुत से लोग उसी तौर-तरीके के आदी हा जाते हैं। उसी के प्रवाह में बहते रहते हैं। रचनाकार जो असल में सबसे पहले एक विचारक होता है, वह संसार और समाज की पारंपरिक धारा के विरुद्ध सोचता है। नया सेचता है। नया करना चाहता है। इसीलिये वह नया रचता हैं उसकी रचना में संसार से भिन्न धारा होने के कारण ही वह हमारे आकर्षण का कारण बनती है।

इस तरह संसार में रहना भी कवि के लिये आवश्यक होता है और उससे भिन्न राह बनाना भी। यही भाव इस गीत का प्रधान स्वर बनकर सामने आता है।

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हुँ !

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हुँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ !

शब्दार्थ :

जग-जीवन = संसार में जीवनयापन की क्रियाएं। झंकृत = झनझनाने का संगीतमय स्वर। स्नेह-सुरा = प्रेम की शराब। पान = पीना। ध्यान करना = परवाह करना। जग की गाते = संसार के चलन की प्रशंसा करते। मन का गान करना = अपने मौलिक विचारों को रखना

प्रसंग : कवि इस काव्यांश में अपने और संसार के रिश्तों का उद्‌घाटन कर रहे हैं।

व्याख्या : कविवर बच्चन जी इस कवितांश में अपने और संसार के मध्य के रिश्तों की विवेचना करते हुए कहते हैं कि यह संसार जिसमें मैं आया हुआ हूं, उसका जीवन जीने का और जीवन के साथ व्यवहार करने का अपना एक पारंपरिक ढंग है। मैं उसकी इस शैली को अपने लिये अनुकूल नहीं पाता, इसलिये वह मेरे लिये भार स्वरूप ही है। जीवन जीने के बारे में मेरे अपने मौलिक विचार हैं, परंतु मैं सांसारिक तरीकों का निषेध भी नहीं करता, लिहाजा अपने सिर पे लादे चलने के लिये विवश हूं। बावजूद इसके मैं अपने जीवन में उसके प्रति नफरत नहीं, प्यार ही रखता हूं। मेरा जीवन जिन सांसों पर निर्भर है, उसे अपनी संवेदना से झंकृत कर देना वाला 'कोई' मधुर व्यक्तित्व भी मुझे इसी संसार से उपलब्ध हुआ है। उसने जीवन को संगीत की मधुरता से भर दिया है।

कवि अपना आत्मपरिचय देते हुए कहते हैं कि मैं इसी प्राप्त प्रेम की शराब को पिया करता हूं। इसका नशा मुझे अलौकिक आनंद से सराबोर कर देता है। इसमें डूबे रहने के कारण मैं दुनिया के बारे में सोचता तक नहीं। इसी कारण से दुनिया ने मुझे उपेक्षित कर रखा है। संसार का ऐसा चलन है कि जो उसके राग में अपना राग मिलाना जानते हैं, संसार केवल

उनका ही आदर किया करता है। मुझे भी उसके आदर की कहां दरकार है, मैं तो अपने मन के गीतों को ही गाने में मस्त हूं।

काव्य सौंदर्य क्या है? : कवितांश में रस, अलंकार, भाषा, भाव आदि के चमत्कार को काव्य सौंदर्य कहा जाता है। इसे पद सौंदर्य, पद लालित्य, पद सौष्ठव भी कहते हैं।

काव्य सौंदर्य : 1 कविता की भाषा सरल और सहज है। इसी कारण वह संप्रेषणीय भी है। सीधे हृदय तक पहुंचती है।

2 कविता में शांत रस है।

3 'स्नेह-सुरा', यहां पर कवि ने प्रेम को ही शराब बनाकर प्रस्तुत किया है। इसी तरह 'सांसों के दो तार', में सांसों को तार बना दिया है, अतः यहां पर रूपक अलंकार है।

रूपक अलंकार किसे कहते हैं? : जहां पर उपमेय को ही उपमान बना दिया जाये वहां पर रूपक अलंकार होता है। उपमेय अर्थात जिसका वर्णन किया जाये। यहां पर 'स्नेह' का वर्णन किया जा रहा है, तो वह हुआ उपमेय। उपमान अर्थात जिसके साथ उसका रूप परिवर्तन कर जाये। यहां पर 'सुरा' उपमान है।

धर्म या गुण किसे कहते हैं? : जिस गुण के आधार पर तुलना या समानता दिखायी जा रही हो, उसे धर्म या गुण कहते हैं। जैसे कि यहां पर स्नेह और शराब में नशे समान गुण को देखा गया है।

विशेष-

कवि ने संसार और अपने विचारों तथा शैली में भिन्नता को अभिव्यक्त किया है।

प्रश्न : (क) 'जगजीवन का भार लिए फिरने' से कवि का क्या आशय हैं? ऐसे में भी वह क्या कर लेता है?

उत्तर : (क)40 से 50 शब्दों में

प्रश्न: (ख) 'स्नेह-सुरा' से कवि का क्या आशय है?

प्रश्न : (ग) आशय स्पष्ट कीजिए 'जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते'

प्रश्न : (घ) 'साँसों के तार' से कवि का क्या तात्पर्य हैं? आपके विचार से उन्हें किसने झंकृत किया होगा?

शेष अगली कक्षा में

धन्यवाद

ऋचा पाण्डेय

नोट:- प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य रूप से सभी छात्र लिखे और मुझे हिंदी का जो ग्रुप हमने बनाया है उसमे चेक कराएँ

वर्तनी का विशेष ध्यान रखें